धर्म के लक्षण (10 Commandments) :

1. सत्य बोलना
2. चोरी न करना
3. इन्द्रिय नियंत्रण
4. मन, वचन, कर्म से पवित्रता–सुचिता
5. बुद्धि से कार्य–निष्पादन
6. संयम
7. धैर्य
8. क्षमा
9. ज्ञान
10. क्रोध न करना।

धर्म के क्षेत्र : प्राप्तव्य :

1. **धर्म के मूल्य (Values-Ethics)** : जीवन मूल्य या नैतिक मूल्य
2. **अर्थ (Basic Survival)** : जीविकोपार्जन हेतु आर्थिक व्यवस्था
3. **काम (Progeny Development)** : सन्तानोत्पत्ति एवं वंश–विकास
4. **मोक्ष (Enlightenment, Liberation or Self-realization)** : ज्ञान–विज्ञान, आत्मिक–विकास, मुक्ति, स्वतंत्रता और आत्म साक्षात्कार।

हजारों **वर्षों में हम मानव जाति को, 84 लाख योनियों में, सर्वश्रेष्ठ एवं सबसे अधिक विकसित, बुद्धिमान एवं विवेकशील प्रजाति मानते आ रहे हैं, यद्यपि हमारे पास इस बात को प्रमाणित या प्रदर्शित करने के पर्याप्त सबूत मौजूद नहीं हैं।** प्रत्यक्षतः तो ऐसा प्रमाणित होता है कि 84 लाख योनियों में मानव प्रजाति में सबसे अधिक विसंगतियां, अपराध, शोषण, क्रूरतायें, युद्ध, उन्माद, तनाव, आर्थिक–असमानता, भूख–गरीबी, बेरोजगारी आदि मौजूद हैं, जिसकी वजह से पूरी मानव–जाति नर्क में जीते हुये, अपने विनाश का इंतजार करती हुई दिखाई पड़ती है। परन्तु कम विकसित प्रजातियां अधिक सुखी, व्यवस्थित, मर्यादा और शान्ति के साथ जीवन व्यतीत करती प्रमाणित होती हैं।

क्या कारण है कि हम पिछले 5000–10,000 वर्षो में बैठकर, आपस में किसी भी प्रकार इस बात का फैसला या सहमति नहीं बना पाये कि किस प्रकार प्रत्यक्षतः सम्मिलित सहभागिता और **सहयोग से मिल–जुलकर शान्ति से अपने–अपने धर्मों के साथ या सब धर्मों के सम्मिलित सार के साथ न्यायपूर्वक रह सकें?** यह जानने की आवश्यकता से कोई इन्कार नहीं कर सकता।

पूरे विश्व में सभी धर्मों के सर्वमान्य एवं सर्वोच्च धर्म गुरूओं की सहमति से एक धर्म–संसद के आयोजन के द्वारा निम्न बिन्दुओं पर विचार करके सर्वमान्य सहमति बनाने की शुरूआत की जाये :

1. **सर्वोत्तम धर्म कौन सा है? जो पूरी मानव जाति द्वारा ग्राह्य होने के साथ–साथ सर्वोच्च धर्मगुरूओं को भी मान्य हो।**

परन्तु इस प्रकार की वैचारिक क्रान्ति धर्म के क्षेत्र में कठिन प्रतीत होती है। धर्म–गुरूओं और अनुयायियों के अहम (Ego) इस प्रयास की सफलता में बाधा उत्पन्न करेंगे।

2. **सभी धर्मों की समानतायें, सार–तत्त्वों पर चर्चा करके एक नये धर्म के विकास में उन सभी को समायोजित करने की संभावनाओं की तलाश की जा सकती है।**